डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा
प्रधानाचार्य सह ऐसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, सी.एम.जे.कॉलेज दोनवारीहाट खुटौना,मधुबनी– 847227
Email ID: principalcmtjcollege@gmail.com Web:www.cmjcollege.com Mob.No 8544513344

हिन्दी प्रतिष्ठा–2 के छात्रों के लिए कोर्स मैटेरियल (दिनांक–22 अप्रैल, 2020)

आधुनिक काल की प्रेरक परिस्थितियों का वर्णन

हिन्दी का आधुनिक काल साहित्य की विविध विधाओं की समृद्धि का काल है। इसका समय 1850 ई0 से माना जाता है। इस युग के साहित्य में व्यापक परिवर्तन को देखते हुए कुछ साहित्य समीक्षकों ने इसे 'संक्रान्ति काल' कहा। ऐतिहासिक विकास की परिस्थितियों ने आधुनिक काल की प्रेरक परिस्थितियों का निर्माण किया। इसका कोई एक कारण नहीं है, बल्कि तत्कालीन समय की विविध राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संघर्षों और संपर्कों का परिणाम है। यही कारण है कि इस युग के साहित्य में विविधता पायी जाती है। इस काल में हिन्दी काव्य सर्जना ने कई मोड़ लिए। एक, उसने साहित्य में पारंपरिक काल्पनाषीलता से अपने को अलग किया और दूसरे, आदर्षवाद की भूमिकाओं को त्याग कर यथार्थवादी भौतिक भूमि को अपनाकर साहित्य रचना की। गद्य का व्यवहार और गद्य साहित्य की विविध विधाओं– नाटक, कविता, कहानी, उपन्यास, निबंध, रेखाचित्र, जीवन–चरित्र, रिपोर्ताज, यात्रा वृतांत, डायरी, आत्मकथा आदि का व्यापक विकास हुआ। काव्य रचना में ब्रजभाषा से मुक्त होकर आधुनिक हिन्दी गद्य का उपयोग आरंभ हुआ। इस युग का साहित्य अंग्रेजों की गुलामी, यातना, लूट और दुःख से मुक्ति का संघर्ष है और हिन्दी भाषा उसका धारदार हथियार। यही कारण है कि इस युग का साहित्य हमारे जीवन के अधिक निकट और जीवन की समस्याओं से संघर्षयुक्त दिखता है। इसी परिवर्तित दृष्टिकोण की पृष्ठभूमि में आधुनिक काल में राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों ने आधुनिक काल के साहित्य–निर्माण में सहयोग किया।

राजनीतिक परिस्थिति :– 1857 ई0 का प्रथम राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम न केवल राजनीतिक दृष्टि से बल्कि साहित्यिक दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण एवं अविस्मरणीय है। हिन्दी में आधुनिकता के सूत्रपात का समय यही है। रेल, डाक, तार, प्रेस और अन्य वैज्ञानिक साधनों के प्रदाता ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रति लोग कृतज्ञ थे किन्तु उसके द्वारा षोषण, झूठ और लूट से खुष नहीं थे। 1857 की जनक्रांति ने भारतीयों में पहली बार व्यापक राजनीतिक चेतना का सूत्रपात किया। लोग परिस्थितियों को देखने के साथ–साथ परिस्थितियों पर सोचने भी लगे। भारतीयों की राजनीतिक चेतना से प्रादुर्भूत राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति पहले ब्रिटिष इंडियन एसोसिएषन और फिर नेषनल कांग्रेस के माध्यम से हुई। इस काल में अनेक धार्मिक तथा सामाजिक सुधारवादी आंदोलनों का जन्म हुआ। सत्ता के हस्तानांतरण और ब्रिटिष साम्राज्य की कठोर यातनावादी, व्यवसायवादी और झूठ–लूट की व्यवस्था के तहत भारतीय साहित्यिक गतिविधियों पर रोक, दंड,कारावास और रचनाकार के समक्ष ही

उसकी रचना को जलाने आदि प्रावधानों ने आधुनिक काल के साहित्यिक आंदालनों, षैक्षणिक, धार्मिक तथा सामाजिक सुधारवादी आंदोलनों को जन्म दिया। इन सबके बीच दिया। भारतेन्दु ने साहित्य में महज भारतीय राष्ट्रीयता के प्रचार प्रसार के लिए 'नाटक' विधा को चुना और संगीतात्मकता की दृष्टि से काव्य के लिए ब्रजभाषा में ही काव्य रचना पर बल दिया। 1885 ई0 में 'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस' की स्थापना राष्ट्रीय जागरण का सुबूत है। भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावाद युग, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता आदि साहित्य में राजनीतिक जायजा के साथ साहित्य की रचना हुई।

<u>सामाजिक परिस्थिति</u> :– आधुनिक हिन्दी साहित्य के निर्माण में तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियां पूरी जीवंतता के साथ उपस्थित हुई हैं। इस काल के साहित्य में भारतीय मध्यवर्ग की सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक चेतना की अभिव्यक्ति हुई है। 'साहित्य समाज का दर्पण है', 'साहित्य समाज की अनुकृति है', 'साहित्य सामाजिक परिवर्तन और विकास का साधन है' आदि स्लोगन इस बात की ओर संकेत करता है कि रचनाकार अपने साहित्य और समाज के प्रति कितना संवेदनषील थे। 'ब्रह्मसमाज' और 'आर्यसमाज' की स्थापना सामाजिक–धार्मिक और सुधारवादी दृष्टिकोण से परिचालित है। 'ब्रह्मसमाज' के संस्थापक राजाराममोहन राय पष्चिम की ओर झुके और 'आर्यसमाज' के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती प्राचीन वैदिक संस्कृति की ओर। इन लोगों ने सामाजिक उत्थान के साथ–साथ राष्ट्रीयता का संदेष फैलाया। इसी से आधुनिक युग के साहित्य और समाज पर पष्चिमी आधुनिकता के साथ–साथ प्राचीन सांस्कृति धरोहर के प्रति संवेदनषीलता दिखलायी पड़ती है। इसके अलावे अकाल, महामारी, बेकारी, सामंती बेगारी और राजनीतिक अत्याचारों से त्रस्त आम जनता में देष–प्रेम की भावना प्रबल हुई, जिसका प्रतिफलन आधुनिक युग के साहित्य में दिखता है। सामाजिक सुधार और राष्ट्र–प्रेम की भावना को प्रज्वलित करने के लिए अनेक छोटी–छोटी संस्थाओं का जन्म हुआ, जिसने पूर्ण आस्था–विष्वास के साथ हस्तलिखित और टंकित अनेक छोटी–छोटी पत्रिकाओं के सहारे हिन्दी साहित्य के विकास और देष–प्रेम के संघर्ष का मार्ग प्रषस्त किया। 1800 ई0 में कलकत्ते में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना से हिन्दी और उर्दू दोनों का विकास हुआ। भाषा मुंषी के रूप में आधुनिक हिंदी के आदि गद्य रचयिता लल्लूलाल ने 'रानी केतकी की कहानी' लिखी और सदल मिश्र ने 'नासिकेतोपाख्यान' की रचना की। 30 मई 1826 में हिन्दी का पहला पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' प्रकाषित हुआ। 1835 ई0 में लॉर्ड मेकाले के प्रयास से अंग्रेजी भाषा माध्यम बना और उसके साथ ही राजनीतिक और सामाजिक गुलामी के साथ भाषागत, सांस्कृतिक और वेषभूषा की गुलामी से जनसाधारण में आक्रोष बढ़ने लगा था।

<u>सांस्कृतिक एवं धार्मिक परिस्थितियां</u> :– समाज में सामाजिक और धार्मिक विसंगतियों के खिलाफ आधुनिक काल में आर्यसमाज, ब्रह्मसमाज, राधास्वामी संप्रदाय, थियोसोफिकल सोसायटी आदि सामाजिक–धार्मिक आंदोलनों ने अपने–अपने स्तर से सामाजिक और धार्मिक जागृति फेलाकर लोगों को कूपमंडूकता से निकालने का प्रयास कर

रही थी। पाष्चात्य संस्कृति और चिन्तन के प्रवेष ने भारतीय चिन्तन पर व्यापक और क्रांतिकारी प्रभाव डाला। फ्रायड, डार्विन, नित्से, सार्त्र, कार्ल मार्क्स आदि की अवधारणाओं ने व्यापक रूप से आधुनिक साहित्य, समाज, धर्म और राजनीति को प्रभावित किया। इन सबसे नये परिवर्तन, नये चिन्तन और भारत की आजादी का रास्ता तैयार हुआ। 1914–19 के पहले महायुद्ध और 1939–45 के दूसरे महायुद्ध ने पूरी चिन्तन प्रणाली को बदला और अंग्रेजों की कमर टूट गयी। 1942 ई0 में महात्मा गाँधी द्वारा 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' आंदोलन आदि के प्रभाव में 15 अगस्त, 1947 को भारत आजाद हुआ। आजादी के बाद का हिन्दी साहित्य का इतिहास स्वाधीन देष की चेतना का इतिहास है। इस बीच साहित्य में अनेक प्रयोग हुए तथा राजानीतिक और सामाजिक जीवन ने अनेक महत्त्वपूर्ण मोड़ लिये। 1962 में चीनी आक्रमण, 1971 में भारत–पाक युद्ध और उत्तर आधुनिकता, विखंडनवाद, उदारीकरण, निजीकरण और भूमंडलीकरण आदि का व्यापक प्रभाव हिन्दी साहित्य पर पड़ा। हिन्दी के प्रचार–प्रसार में हिन्दी संगीत और फिल्मों का व्यापक प्रभाव न केवल भारत में बल्कि वैष्विक स्तर रहा है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि आधुनिक काल की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक गतिविधियों तथा हिन्दी–उर्दू विवाद आधुनिक काल के साहित्य नयी चेतना के प्रेरणास्रोत बने। उपर्युक्त वर्णित परिस्थितियों में आधुनिक हिन्दी साहित्य का व्यापक विकास हुआ, जिसमें कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, समीक्षा, आलोचना, एकांकी, रेखाचित्र, जीवन चरित्र, रिपोर्ताज, आत्मकथा, डायरी आदि विभन्न साहित्य रूपों का प्रचलन हुआ। आज हिन्दी विष्व भाषा बनने की होड़ में अग्रसर है। हिन्दी साहित्य और आलोचना के क्षेत्र में भी वैष्विक प्रभाव और महत्त्व देखा जा सकता है। प्रेमचंद सरीखे अनेक साहित्यकारों और नामवर सिंह आदि की आलोचना विष्व की अनेक भाषाओं में अनूदित होकर वैष्विक प्रभाव को प्रदर्षित कर रहा है।

●

दिनांक : 22/04/2020 **– डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा**